

## बेहद का वैराग्य - 03

अव्यक्त बापदादा :-

» \_ » कोई दुर्गति की रीति-रस्म चाहे स्थूल, चाहे सूक्ष्म है, उनसे वैराग्य आना चाहिए। जैसे भक्ति के स्थूल साधनों से वैराग्य आ गया नोलेज के आधार पर, वैसे इन भक्ति-मार्ग के रस्म से भी ऐसे वैराग्य आना चाहिए।

» \_ » इस वैराग्य के बाद ही याद की स्पीड बढ़ सकेगी। नहीं तो कितना भी पुरुषार्थ करो। जैसे भक्त लोग कितना भी पुरुषार्थ करते हैं भगवान की याद में बैठने का, बैठ सकते हैं?

» \_ » कितना भी अपने को मारते हैं, कष्ट करते हैं, भिन्न रीति से समय देते हैं, सम्पत्ति लगाते हैं, फिर भी हो सकता है? यहाँ भी अगर दुर्गति मार्ग की रीति-रस्म है तो याद की यात्रा की स्पीड बढ़ नहीं सकती, अटूट याद हो नहीं सकती।

(22.11.1972)

➤ भक्ति के ऐसे कौनसे संस्कार हैं, जो ज्ञान मार्ग में नहीं होने चाहिये ?

» \_ » भक्ति के मुख्य संस्कार हैं

→ मांगना

- भक्ति मार्ग में स्थूल रीति से मांगते हैं
- ज्ञान मार्ग में क्या क्या मांगते हैं ?

→ स्थूल रीति से मांगना

- स्नेह मांगना
- सहयोग मांगना
- बहुत ज्यादा EXPECTATIONS रखना दुसरो से
  - ▶ साथियों से
  - ▶ बडो से
  - ▶ बाबा से
  - ▶ छोटो से

→ सूक्ष्म रीति से मांगना

■ प्यार

■ सहयोग मांगना

- ▶ हमने उसे इतना सहयोग दिया
- ▶ वो भी हमे इतना सहयोग दे

■ CARE

- ▶ कोई हमारी CARE करे

- ▶ हमारी तरफ ATTENTION दे
- ▶ हमे समय दे
- ▶ हमने जितना समय दिया था अब वो भी हमे समय दे
- ▶ हमारा ध्यान रखे
- ▶ बीमार है हम, तो देखने आय

## ■ EXPECTATIONS

- ▶ दुसरो से बहुत ज्यादा EXPECTATIONS रखना
- ▶ हमने उसकी तारीफ की
- ▶ वो भी हमारे लिये कुछ 2 शब्द अरछा बोले
- ▶ उनको सफलता मिली थी, तो हमने प्रशंशा की थी
- ▶ अब हमे सफलता मिली है,
- ▶ तो वो कोई हमारी प्रशंशा नहीं करते है

## ■ मान सन्मान की कामना

- ▶ हमे मान दिया जाय
- ▶ पहले वो मान दे, तो हम देंगे
- ▶ पहले वो झुके बाद में हम झुकेंगे

## ■ दुखी होने का स्वभाव

- ▶ कोई भी छोटी छोटी चीजो से दुखी होना
- ▶ बहुत ज्यादा HURT होना
- ▶ अति SENSITIVE NATURE यह सबसे बड़ी कमी है
- ▶ सहानुभूति चाहिये
- ▶ किसी के बारे में दिन रात सोच के दुखी होना
- ▶ दुखी करने वाली बात सोच सोच के उदास होना
- ▶ बाबा से शिकायत करना

## ■ किसी वस्तु / व्यक्ति पर आधारित तपस्या हो

- ▶ अगर यह होगा तो ही हम जायेंगे तपस्या करने
- ▶ कोई भी कदम अकेले नहीं उठा सकेंगे
- ▶ कोई न कोई साथ में चाहिये, हर चीज के लिये

## ■ बुद्धि को भटकाना

- ▶ कही पर भी चैन न आना
- ▶ इधर से उधर भटकते ही रहना
- ▶ कही ठिकाना मिल भी जाय,
- ▶ फिर भी मन से भटकना चालु ही है
- ▶ कोई अरछा OPTION ढूँढते ही रहते है

## ■ TIME WEST करना

## ■ फिसुल खर्च करना

- ▶ यह भूल जाना की यह पैसा कहा का है
- ▶ यह भूल जाना की यह यज्ञ का है
- ▶ ऐसे ही बर्बाद करना
- ▶ अपनी पर्सनल सुख सुविधा के लिये खर्च किये जाना
- ▶ व्यर्थ पैसे गवाना, SHOPPING में
- ▶ लेना कुछ नहीं, फिर भी SUPER MARKET जाते है
- ▶ की कुछ अरछा दिखा तो ले लेंगे
- ▶ चाहे जरूरत है या नहीं
- ▶ सदा स्मृति में रहे की यह धन जो है, वो किसका है
- ▶ जब यह भाव गम हो जाता है
- ▶ तब यह सारी बातें चालु हो जाती है

## ■ अनावश्यक वस्तुओ का संग्रह करके रखना

- ▶ कितने सालो तक USE नहीं होती है
- ▶ फिर भी रखते है
- ▶ और सोचते है की आज नहीं तो कल काम में आयेगा

## ■ स्वार्थ की भावना

- ▶ हर चीज में स्वार्थ देखना

## ■ जिस मार्ग पर हम चल रहे है, जो साधना हम कर

रहे है, वही सर्व श्रेष्ठ है

- ▶ हमारे धर्म से बड़ा और कोई धर्म है ही नहीं
- ▶ हमारे धर्म के आगे बाकी सब गौण है
- ▶ ऐसे कट्टरवादी नहीं बनना है
- ▶ जिस भाव से हम सेवा करते है
- ▶ बस वही सर्वश्रेष्ठ है
- ▶ और सबको इसी भाव से सेवा करनी चाहिये
- ▶ जैसे हम कोर्स कराते है वैसे ही कराना चाहिये
- ▶ जो हम सोच रहे है, जैसे हमारी भावना है
- ▶ जो हम बोल रहे है, जो हम कर रहे है
- ▶ जो हमारे संस्कार है, जो हमारी वृत्ति, द्रष्टि है
- ▶ हमारा ही सब कुछ सर्व श्रेष्ठ है
- ▶ बाकि का ठीक नहीं है

## ■ स्वयं क प्रति हिन भावना रखना

- ▶ हमेशा ही स्वयं को छोटा समझना
- ▶ इंतज़ार में रहना की कौन मेरे लिये बुरा बोलता है
- ▶ और उसका मैं बुरा लगाऊ
- ▶ किसी ने हमारे बारे में थोडा भी कुछ कह दिया
- ▶ अपमान किया उसको एकदम सीरियसली ले लेना
- ▶ और उनकी बातों से खुद को घायल करना
- ▶ ज्यादा दुःख का, ज्यादा शब्दों में वर्णन करना
- ▶ हिन भावना में ज्यादा रस लेना
- ▶ बुद्धि को इसमें टिकाना, और इसका सुख लेना
- ▶ इसीमें रमण करना
- ▶ अपना समय गवाना, दुसरो को भी सहयोगी बनाना
- ▶ INSULT की किसीने, तो लम्बे समयतक याद रखना
- ▶ यह हिन भावना सबसे बड़ा हमारा दुश्मन है
- ▶ यह इतना सूक्ष्म है, की जिसमें होती है यह भावना
- ▶ उसे खुद को भी पता नहीं होता है
- ▶ की हमारे में यह भावना है

## ■ अहंकार

- ▶ हम ही सबसे बड़े ज्ञानी हैं
- ▶ हमको ही ध्यान लगाना आता है
- ▶ शास्त्रों का हमें पता है
- ▶ हम ही सबसे बड़े दानी हैं
- ▶ हमारा पुरुषार्थ ही सर्व श्रेष्ठ पुरुषार्थ है
- ▶ निमित्त भाव का भी अहंकार

→ **भक्ति से वैराग्य हमें ज्ञान के आधार से आया है**

### ■ यह सब बातों का जब तक ज्ञान ही हमें न हो

- ▶ तब तक वैराग्य लाने का कोई पुरुषार्थ भी नहीं करेंगे
- ▶ और ज्ञान आते ही वैराग्य स्वतः आ जायेगा
- ▶ जैसे ही पता चलेगा की यह नहीं करना है
- ▶ तो वैराग्य स्वतः ही आ जायेगा

→ **जिस चीज से हमें छुटना है**

### ■ तुरंत बाबा का यह महावाक्य सामने लाओ

- ▶ “की बाबा ने मना किया है”
- ▶ तुरंत यह वाक्य अपनी बुद्धि में लाना

»\_» शारीरिक सुख भोग असार है

»\_» उसमे कोई सुख नहीं है

»\_» शरीर का जो भी सुख प्राप्त होता है

→ वह थोड़े समय के लिये ही है

■ थोड़े समय के बाद समाप्त हो जायेगा

- ▶ वो लंबा समय टिक ही नहीं सकता है
- ▶ उसका स्वभाव ही है अनित्यता
- ▶ थोडा समय हुआ फिर समाप्त हो जायेगा
- ▶ बाद में सिर्फ उसकी यादें रह जायेगी
- ▶ और यादें फिर फिर उसे भोगने के लिये विवश करेगी

»\_» शारीरिक सुख भोग खुजली की तरह है

→ खुजाओ खुजाओ खुब खुजाओ

■ फिर थोड़ी देर शांत होगा, जलन होगी तो

■ रुक जाओ, तो फिर और खुजाने की इरछा होती है

■ मिलता कुछ नहीं है

■ और ही खून निकलेगा, जितना ज्यादा खुजाओगे

- ▶ ऐसे ही शारीरिक सुख भोग से भी मिलता कुछ नहीं है
- ▶ और ही इरछाये बढती जाती है
- ▶ और एक बार अगर भोग लिया
- ▶ तो दूसरी बार भोगने की इरछा और तीव्र होती है
- ▶ क्युकी फिर वो हमारा संस्कार बन जाता है

»\_» संसार के जितने भी सुख है उसमे दुःख समाया हुआ है

---